BCC 1

Childhood and Growing Up

Dr. Rajesh Kumar
Asst. Prof.
Department of Education
Nalanda College, Biharsharif (Nalanda)

किशोरावस्था (Adolscence)

किशोरावस्था में शारीरिक विकास

वयः संधि अवस्था की समाप्ति तक बालक का शारीरिक विकास पूर्ण नही हो पाता है, न ही यह प्रारम्भिक किशोरावस्था तक पूरा होता है। किशोरावस्था का आरम्भ लड़कों और लड़कियों में आए जैविक परिवर्तनों से आंका जाता है। किशोरावस्था मानसिक और देहिक परिवर्तनों की एक आधारिक अवधि है जिसे किशोरावस्था पूर्व के विकास का प्रवेश कहते है। युवा व्यक्तियों की शरीरिक परिवर्तनों के प्रति प्रतिक्रिया गर्वीली और आनंदित अपेक्षाओं से लेकर आश्चर्य और भय तक की हो सकती है। यह परिवर्तन लड़कियों में अधिकतर 9 से 12 वर्ष की आयु में एवं लड़को में 11 से 14 वर्ष की आयु में दिखाई देते हैं अधिकांश लड़कियां 10 यां 11 वर्ष की और लड़कें 12 या 13 वर्ष की अवस्था पर लंबाई और भार में तीव्र अभिवृद्धि दर्शाते है। इस अवधि के दौरान और कुछ समय बाद गौण लैंगिक लक्षण उभरते है। यह शारीरिक विकास पिट्यूटरी ग्रन्थि से निकलने वाले हार्मोन की बढ़ोतरी से जुड़ा होता है, जो न केवल अभिवृद्धि के उत्प्रेरक का कार्य करता है बल्कि अन्य ग्रन्थियों (एड्रिनल ग्रन्थि, जनन ग्रंथि ओर थॉयरॉयड) के नियंत्रक के रूप में भी कार्य करता है जो ऊतकों की वृद्धि और कार्यो को निर्धारित करता है। विकास की तीव्र गति लगभग 3 या4 वर्ष की अवधि तक जारी रहती है, जिसके अन्तर्गत लड़कियों में औसतन 12.6 वर्ष की आयु तक और लड़कों में औसतन 14.8 वर्ष की आयु तक अधिकतम अभिवृद्धि होती है। गतिशील विकास के साथ साथ पिट्यूटरी ग्रन्थि अधिवृक्क प्रांतस्था (एड्रिनल कॉर्टेक्स) और यौन ग्रन्थि को अधिक सक्रियता प्रदान करती है। इससे पहले ऐन्ड्रेजेनिक (पुरूष) और ईस्ट्रोजेनिक (महिला) हार्मोन, अधिवृक्क प्रांतस्था के द्वारा, पूर्व पिट्यूटरी ग्रंथि के निर्देश के अनुसार, दोनो लिंगो में भिन्नता लाती है, पुरूष अधिक एंड्रोजेन और महिलाएं अधिक ईस्ट्रोजेन उत्पादित करती है। लिंग हार्मोन वह पदार्थ है जिनका स्त्राव गोनेड द्वारा होता है

ओर ये प्रजनन कार्यो और गौण यौन विशेषताओं का निर्धारण करते है। टेस्टोस्टेरॉन पुरूष लिंग हार्मोन है जो परिपक्व हो जाने पर गौण यौन विशेषताओं के लिए उत्तरदायी होता है, जबकि महिला के शरीर में एस्ट्रोजन द्वारा यह भूमिका निभाई जाती है। क्रो एवं क्रो के अनुसार, किशोरावस्था में शारीरिक विकास निम्नलिखित होते है–

1. भार – किशोरावस्था में बालकों का भार बालिकाओं से अधिक बढ़ता है। इस अवस्था में अन्तम में बालकों का भार बालिकाओं से लगभग 25 पौंड अधिक होता है।

2. लम्बाई – इस अवस्था में बालक और बालिका की लम्बाई बहुत तेजी से बढ़ती है। बालक की लम्बाई 18 वर्ष तक और उसके बाद भी बढ़ती रहती है। बालिका अपनी अधिकतम लम्बाई पर लगभग 16 वर्ष की आयु में पहुॅच जाती है।

3. सिर व मस्तिष्क – इस अवस्था में सिर और मस्तिष्क का विकास जारी रहता है। 15 या 16 वर्ष की आयु में सिर का लगभग पूर्ण विकास हो जाता है एवं मस्तिष्क का भार 1,200 और 1,400 ग्राम के बीच में होता है।

4. हड्डियॉ– इस अवस्था में अस्थीकरण की प्रक्रिया पूर्ण हो जाती है। हड्डियों में पूरी मजबूती आ जाती है और कुछ छोटी हड्डियॉ एक–दूसरे से जुड़ जाती है।

5. दॉत – इस अवस्था में प्रवेश करने के समय बालकों और बालिकाओं के लगभग सब स्थायी दॉत निकल आते है। यदि उनके प्रज्ञादन्त निकलने होते है, तो वे इस अवस्था के अन्त में य प्रौढ़ावस्था के आरम्भ में निकलते है।

6. अन्य अंग – इस अवस्था मतें मॉसपेशियों का विकास तीव्र गति से होता है। 12 वर्ष की आयु में मॉसपेशियों का भार कुल शरीर के भार का लगभग 33 प्रतिशत और 16 वर्ष की आयु मे लगभग 44 प्रतिशत होता है। हृदय की धड़कन में निरन्तर कमी होती है। जिस समय बालक प्रोढ़ावस्था में प्रवेश करता है, उस समय उसके हृदय की धड़कन 1 मिनट में 72 बार होती है। बालकों के सीने और कंधे एवं बालिकाओं के वक्षस्थल और कूल्हे चौड़े हो जाते है। बालक में स्पप्न–दोष और बालिकाओं में मासिक धर्म आरम्भ हो जाता है। दोनों के यौनांग पूर्ण रूप से विकसित हो जाते है।

किशोरावस्था में बौद्धिक विकासः–

इस अवधि में जिस प्रकार शारीरिक विकास तीव्र गति से होता है उसी प्रकार बौद्धिक विकास में भी तीव्र परिवर्तन होते है। बुद्धि की वृद्धि तथा विकास अनेक कारकों पर निर्भर

है। मस्तिष्क और उससे संबंधित स्नायुओं की परिपक्वता बौद्धिक वृद्धि के सर्वाधिक प्रभावित करती है। इस अवस्था में बालक के सोचने, समझने और चिंतन करने की शक्ति चरम सीमा पर होती है। इनकी सोच समालोचनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं सृजनात्मक होने लगती है वह केवल तथ्य ही नही वरन् सम्भावनाओं पर भी विचार करने लगते है एवं इन संभावनाओं की तलाश में वह अनुमान और कल्पनाओं का सृजन करते है व इन कल्पानाओं की जांच भी करते है। उनमें अधिक कठिन समस्याओं के समाधान और इनके सामान्यीकरण की सोच विकसित होने लगती है। वुडवर्थ के शब्दों में''मानसिक विकास 15 से 20 वर्ष की आयु मे अपनी उच्चतम सीमा पर पहुंच जाता है।'' हम इस विकास से सम्बन्धित मुख्य अंगों पर प्रकाश डाल रहे हैं, यथा–

1. बुद्धि का अधिकतम विकासच – किशोरावस्था में बुद्धि का अधिकतम विकास हो जाता है। यह विकास हारमोन के अनुसार 15 वर्ष में, जोन्स एवं कोनार्ड के अनुसार 16 वर्ष में और स्पीयरमैन के अनुसार 14 से 16 वर्ष के बीच में होता है।

2. मानसिक स्वतन्त्रता – किशोर के मानसिक विकास का एक मुख्य लक्षण है– मानसिक स्वतन्त्रता। वह रूढ़ियों, रीति–रिवाजों, अन्धविश्वासों और पुरानी परम्पराओं को अस्वीकार करके स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने का प्रयास करता है।

3. मानसिक योग्यताएँ – किशोर की मानसिक योग्यताओं का स्वरूप निश्चित हो जाता है। उसमें सोचने, समझने, विचार करने, अन्तर करने और समस्या का समाधान करने की योग्यताएँ उत्पन्न हो जाती है। एलिस क्रो के अनुसार – ''किशोर में उच्च मानसिक योग्यताओं का प्रयोग करने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है, पर वह प्रौढ़ों के समान उनका प्रयोग नहीं कर पाता है।''

4. ध्यान – किशोर में ध्यान केन्द्रिता करने की क्षमता का पर्याप्त विकास हो जाता है। वह किसी विषय या वस्तु पर अपने ध्यान को बहुत देर तक केन्द्रित रख सकता है।

5. चिन्तन–शक्ति – किशोर में चिन्तन करने की शक्ति होती है। इसकी सहायता से वह विभिन्न प्रश्नो और समस्याओं का हल खोजता है, पर उसके हल साधारणः गलत होते है। इसका कारण बताते हुए, एलिस क्रो ने लिखा है– ''किशोर का चिन्तन बहुधा शक्तिशाली पक्षपातों ओर पूर्व – निर्णयों से प्रभावित रहता है।''

6. तर्क–शक्ति – किशार में तर्क करने की शक्ति का पर्याप्त विकास हो जाता है। तर्क किए बिना वह किसी बात को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होता है।

7. कल्पना–शक्ति – किशोर वास्तविक जगत में रहते हुऐ भी कल्पना के संसार में विचारण करता है। कल्पना के बाहुल्य के कारण उसमें दिवा– स्वप्न देखने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है। कुछ किशोर अपनी कल्पना–शक्ति को कला, संगीत, साहित्य और रचनात्मक कार्यो के द्वारा व्यक्त करते है। बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में कल्पना–शकित अधिक होती है।

8. रूचियों की विविधता – किशोरावस्था में रूचियों का विकास बहुत तीव्र गति से होता है। बालको और बालिकाओं में कुछ रूचियॉ समान और कुछ भिन्न होती है। जैसे–

1. समान रूचियॉ – भावी जीवन और भावी व्यवसाय में रूचि, सिनेमा देखने, रेडियों सुनने और प्रेम–सहित्य पढ़ने में रूचि।

2. विभिन्न रूचियॉ – बालकों में स्वस्थ बनने और बालिकाओं में सुन्दर बनने की रूचि, बालकों की खेल–कूद में और बालिकाओं की संगीत, नृत्य, नाटक आदि में रूचि, बालकों और बालिकाओं की एक–दूसरे में रूचि।

पियाजे नामक मनोवैज्ञानिकक के बौद्धिक विकास पर किए गए अध्ययन के अनुसार विकास मुख्यतः अवस्था दर अवस्था होता है तथा प्रत्येक अवस्था का पहली अवस्था पूर्व की अवस्था से संयोग होना आवश्यक है। पियाजे ने बौद्धिक विकास की अवस्था को चार मुख्य अवस्थाओं में बांटा है जो कि निम्नलिखित है–

क्र.	आयु	अवस्था	बौद्धिक विकास
1.	जन्म से 2 वर्ष	संवेदी क्रियात्मक अवस्था	यह बौद्धिक विकास की प्रथम अवस्था है। इस अवस्था में बालक संवेदनात्मक एवं गत्यात्मक क्रियाशीलता में व्यस्त रहते है।
2.	2 से 7 वर्ष	पूर्व संक्रियात्मक अवस्था	इस अवस्था में बालक संकेतात्मक प्रक्रियाएं बनाने एवं प्रयोग करने लगते है, उनके सोचने की प्रक्रिया संगठित हो जाती है। अब वह वास्तविक समस्याओं व परिस्थितियों को समझने लगते है।

3.	7 से 12 वर्ष	मूर्त संक्रियात्मक	इस अवस्था में बालक को आकार, वजन तथा अंको का विवेक आ जाता है। वह उन अनुभवों के बारे मे सोचने लगता है जिनका वह अनुभव करता है।
4.	12 वर्ष से प्रौढ़वस्था	औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था	इस अवस्था की विशेषता यह है कि अब बालक में सामान्य नियम, सिद्यान्त तथा उपकल्पनाएँ बनाने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है। उनमें अमूर्त चिंतन की योग्यता आ जाती है।

इस प्रकार पियाजे के अनुसार किशोरावस्था में बालक ऐसी बातो के बारे सोचने की क्षमता रखते है जिन्हें उन्होंने स्वयं कभी देखा या अनुभव भी न किया हो, उदाहरण के लिए वह गणित, रसायन शास्त्र तथा इतिहास जैसे विषयां को समझ लेते है। वही थर्स्टन क मतानुसार मानसिक योग्यताएं एकसाथ तथा समान आयु स्तर पर परिपक्व नही होती है। इनके अनुसार प्रत्यक्षपरक योग्यता बारह वर्ष, वस्तु प्रेक्षक तथा तार्किक योग्यता 14 वर्ष एवं स्मृति व संख्यात्मक योग्यता 16 वर्ष की आयु में परिपक्वता की और अग्रसर होती है। इस अवस्था मे किशोरो में समस्या समाधान के लिए अमूर्त अवधारणाओं एवं निगनात्मक तर्क की सोच विकसित होती है किशोर समस्याओं को हल करने के लिए परीक्षण और त्रुटि सिद्धान्त का अनुसरण करने गलते है। वह समस्या समाधान के लिए व्यवस्थित व तार्किक तरीके से सोचने लगता है। साथ ही साथ इस अवधि में किशोरों की स्मृति शक्ति भी काफी विकसित होती है। और वह एक लंबी अवधि के लिए तथ्यों को बनाए रखने की योग्यता प्राप्त कर लेते है। वह भविष्य की आवश्यकताओं को समझने लगते हैं एवं उनके लिये योजना बना सकते है। बौद्धिक अभिविन्यास में एक अन्य परिवर्तन अपने आसपास के लोगों में और माहौल में ढलने की क्षमता का विकसित होना है। इस अवस्था में किशोरो मे अपनी एक स्वतंत्र सोच और चीजों को परखने और निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है।

बौद्धिक विकास विकास को प्रभावित करने वाले कारकः–

क्रो व क्रो ने लिखा है–''विभिन्न कारक मानसिक विकास को प्रभावित करते है। वंशागत नाड़ी–मण्डल की रचना सम्भावित विकास की गति और सीमा को निश्चित करती है। कुछ अन्य भौतिक दशाएँ या व्यक्तिगत और वातारण–संबंधी कारक मानसिक प्रगति को तीव्र या मन्द कर सकते है।'' जिन कारकों का हमने उल्लेख किया है, उनमें से अधिक महत्वपूर्ण निम्नांकित हैं–

1. वंशानुक्रम – थार्नडाइक और शिविजंगर ने अपने अध्ययनों द्वारा सिद्ध कर दिया है कि बालक, वंशानुक्रम से कुछ मानसिक गुण और योग्यताएँ प्राप्त करता है, जिनमे वातावरण किसी प्रकार का अन्तर नहीं कर सकता है। इसी विचार का समर्थन करते हुए, गेट्स एवं अन्य ने लिखा है–''किसी व्यक्ति का उससे अधिक विकास नहीं हो सकता है, जितना कि उसका वंशानुक्रम सम्भव बनाता है।''

2. परिवार का वातावरण – परिवार के वातावरण का बालक के मानसिक विकास से घनिष्ठ संबंध है। दुःखद और कलहपूर्ण वातावरण में बालक का उतना मानसिक विकास होना सम्भव नहीं है, जितना कि सुखद और शान्त वातावरण में। इस संबंध में कुप्पूस्वामी –''एक अच्छा परिवार, जिसमें माता–पिता में अच्छे संबंध होते है, जिसमें वे अपने बच्चों की रूचियों और आवश्यकताओं को समझते है, एवं जिसमें आनन्द और स्वतंत्रता का वातावरण होता है, प्रत्येक सदस्य के मानसिक विकास में अत्याधिक योग देता है।''

3. परिवार की सामाजिक स्थिति – उच्च सामाजिक स्थिति के परिवार के बालक का मानसिक विकास अधिक होता है। इसका कारण यह है कि उसको मानसिक विकास के जो साधन उपलब्ध होते है, वे निम्न सामाजिक स्थिमित के परिवार के बालक के लिए दुर्लभ होते है। इसकी पुष्टि में स्ट्रैंग के अग्रांकित शब्द उद्धत किये जा सकते है –'' उच्च सामाजिक स्थिति वाले परिवार के बच्चें बुद्धि की मौखिक और लिखित परीक्षाओं में स्पष्ट रूप से श्रेष्ठ होते है।''

4. परिवार की आर्थिक स्थिति– टर्मन ने अपने परीक्षणों के आधार पर बताया है कि प्रतिभाशाली बालक दरिद्र क्षेत्रों से आने के बजाय अच्छी आर्थिक स्थिति वाले परिवारों से अधिक आते है। इसका कारण यह है कि इन बालको को कुछ विशेष सुविधाएँ उपलब्ध रहती है जैसे– उचित भोजन, उपचार के पर्यापत साधन, उत्तम शैक्षिक अवसर, आर्थिक कष्ट से सुरक्षा आदि।

5. माता–पिता की शिक्षा– अशिक्षित माता–पिता की अपेक्षा शिक्षित माता–पिता का बालक के मानसिक विकास पर कहीं अधिक प्रभाव पड़ता है। स्टैंग का कथन है –'' माता–पिता की शिक्षा, बच्चों की मानसिक योग्यता से निश्चित रूप से सम्बन्धित है।''

6. उचित प्रकार की शिक्षा – बालक के मानसिक विकास के लिए उचित प्रकार की शिक्षा अति आवश्यक है। ऐसी शिक्षा ही उसको मानसिक गुणों और बौ0िक विचार को फलिभूत करते हैं।

किशोरावस्था में सामाजिक विकास

किशोरावस्था संक्रमण काल है, जब एक व्यक्ति बच्चे से व्यस्क बनने में, शारीरिक एवं मनो–वैज्ञानिक रूप से रूपान्तरित होता है। यह ऐसा समय है जिसमें नई सामाजिक भूमिकाओं के लिए द्रुत शारीरिक और मानसिक परिवर्तन की मांग होती है। इन परिवर्तनों के कारण किशोरों को भ्रान्तियों ओर दुविधाओ का सामना करना पड़ता है। इस अवस्था मे बालक निर्भरता से स्वायत्ता की तरफ कदम बढ़ाता है। इस समय शारीरिक और सामाजिक परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण सामंजस्य की आवश्यकता होती है। इस अवस्था में किशोरो के सामाजीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति होती है। क्रो एवं क्रो के अनुसार–'' जब बालक 13 या 14 वर्ष की आयु में प्रवेश करता है तब उसके प्रति दूसरों के और दूसरों के प्रति उसके कुछ दृष्टिकोण न केवल उसक अनुभवों में, वरन् सामाजिक सम्बन्धों में भी परिवर्तन करने लगते है।'' इस परिवर्तन के कारण उसके सामाजिक विकास का स्वरूप अग्रांकित होता है–

1. बालकों और बालिकाओं में एक–दूसरे के प्रति बहुत आकर्षण उत्पन्न हो जाता है। अतः वे अपनी सवोत्तम वेश–भूषा, बनाव–श्रृंगार और और सज–धज में अपने को एक–दूसरे के समक्ष उपस्थित करते है।

2. बालक और बालिकाएॅ–दोनो अपने–अपने समूहों का निर्माण करते है। इन समूहों का मुख्य बालक और उद्देश्य होता है– मनोरजन जैसे – पर्यटन, पिकनिक, नृत्य, संगीत आदि।

3. कुछ बालक और बालिकाएॅ किसी भी समूह के सदस्य नहीं बनते है। वे उनसे अलग रहकर अपने या विभिन्न लिंग के व्यक्ति से घनिष्ठता स्थापित कर लेते है और उसी के साथ अपना समय व्यतीत करते है।

4. बालकों में अपने समूह के प्रति अत्याधिक भक्ति होती है। वे उसके द्वारा स्वीकृत वेश–भूषा, आचार–विचार, व्यवहार आदि को अपना आदर्श बनाते है।

5. समूह की सदस्यता के कारण उनमें नेतृत्व, उत्साह, सहानुभूति, सद्भावना आदि सामाजिक गुणों का विकास होता है। साथ ही, उनकी आदतों, रूचियों और जीवन–दर्शन का निर्माण होता है।

6. इस अवस्था में बालकों और बालिकाओं का अपने माता–पिता से किसी न किसी बात पर संघर्ष या मतभेद हो जाता है। यदि माता–पिता उनकी स्वतंत्रता का दमन करके, उनके जीवन को अपने आदेशों के सॉचे में ढालने का प्रयत्न करते है, या उनके समक्ष नैतिक आदर्श प्रस्तुत करके उनका अनुकरण किए जाने पर बल देते है, तो नये खून में विद्रोह की भावना चीत्कार कर उठती है।

7. किशोर बालक अपने भावी व्यवसाय का चुनाव करने के लिए सदैव चिन्तित रहता है। इस कार्य में उसकी सफलता या असफलता उसके सामाजिक विकास को निश्चित रूप से प्रभावित करती है।।

8. किशोर बालक और बालिकाऍ सदैव किसी न किसी चिन्ता या समस्या में उलझे रहते है, जैसे– धन, प्रेम, विवाह, कक्षा में प्रगति, पारिवारिक जीवन आदि। ये समस्याऍ उनके सामाजिक विकास की गति को तीव्र या मन्द, उचित या अनुचित दिशा प्रदान करती है।

यह अवधि किशोरो के लिए सामाजिक विकास और समायोजन की अवधि है। इस अवधि में सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक विकास साथियो के समूह के प्रभाव में वृद्धि होना है। इस अवस्था में बालक के व्यवहार को आकार देने में साथी समूह के प्रकार का विशेष योगदान होता है। उनकी रूचियों, नजरियों ओर मूल्यों पर भी साथियो का प्रभाव रहता है। इस समयावधि में लड़के ओर लड़कियॉ समाज में अपने स्थान ओर स्थिति को लेकर सचेत हो जाते है और धीरे–धीरे सामाजिक गतिविधियों और समाज में अपने क्षेत्र में विस्तार करने की कोशिश करने लगते है। वह अपनी पहचान की खोज में व्यस्त हो जाते है। और यह खोज लिंग, साथी समूहो, संस्कृति व पारिवारिक पृष्ठभूमि से प्रभावित होती है। वह अधिक स्वतंत्र होकर निर्णया लेना चाहते है। वह घर और स्कूल में अधिक जिम्मेदारी वाले काम करना चाहते है। किशोरो के मस्तिष्क विकास की प्रकृति होती है कि वह नए अनुभवों की तलाश करते है और अधिक जोखिमपूर्ण कार्य करना चाहते है। बालक में इस अवधि में नैतिक मूल्यों तथा नैतिकता का विकास होता है वह सही और गलत अपने निणयों/तर्को

के आधार पर तय करता है। इनमें आत्मसम्मान की भावना प्रबल होती है। वर्तमान समय में किशोर सामाजीकरण में संवाद के विभिन्न तरीकों (जैसे – इंटरनेट, मोबाइल फोन, सोशल मीडिया आदि) को सीखता हैं जिन्होने बालक के सामाजीकरण के एक नए आयाम को रचा है।

सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक

स्किनर व हैरीमन के शब्दों में :– ''वातावरण और संगठित सामाजिक साधनों के कुछ ऐसे विशेष कारक हैं, जिनका बालक के सामाजिक विकास की दशा पर निश्चित और विशिष्ट प्रभाव पड़ता है।'' उल्लिखित कारकों में से अधिक महत्वपूर्ण अधोलिखित हैं–

1. वंशानुक्रम – कुछ मनोवैज्ञानिकों का मत है कि बालक के सामाजिक विकास पर वंशानुक्रम का कुछ सीमा तक प्रभाव पडत्रता है। इनकी पुष्टि में क्रो एवं क्रो ने लिखा है– शिशु की पहली मुस्कान या उनका कोई विशिष्ट व्यवहार वंशानुक्रम से उत्पन्न होने वाला हो सकता है।

2. शारीरिक व मानसिक विकास – स्वस्थ और अधिक विकसित मस्तिष्क वाले बालक का सामाजिक विकास अस्वस्थ और कम विकसित मस्तिष्क वाले बालक की अपेक्षा अधिक होता है। सोरेनसन ने ठीक ही लिखा है – ''जिसप्रकार उत्तम शारीरिक और मानसिक

विकास साधारणतः सामाजिक परिपक्वता में योग देता है, उसी प्रकार कम शारीरिक और मानसिक विकास, बालीक की सामाजिकता की गति को मन्द कर देता है।''

3. संवेगात्मक विकास – बालक के सामाजिक विकास का एक महत्वपूर्ण आधार उसका संवेगात्मक विकास है। क्रोध व ईर्ष्या करने वाला बालक दूसरे की घृणा का पात्र बन जाता है। उसके विपरीत, प्रेम और विनोद से परिपूर्ण बालक सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है। ऐसी स्थिति में दोनों बालकों के सामाजिक विकास में अंतर होना अस्वाभाविक है। वस्तुतः जैसा कि क्रो एवं क्रो ने लिखा है – ''संवेगात्मक और सामाजिक विकास साथ – साथ चलते हैं।''

4. परिवार – परिवार ही वह स्थान है, जहॉ सबसे पहले बालक का स समाजीकरण होता है। परिवार के बड़े लोगों का जैसा आचरण और व्यवहार होता है, बालक वैसा ही आचरण और व्यवहार करने का प्रयत्न करता है।

5. पालन – पोषण की विधि – माता – पिता द्वारा बालक के पालन – पोषण की विधि उसके सामाजिक विकास पर बहुत गहरा प्रभाव डालती हैं, उदाहरणार्थ, समानता के आधार पर पाला जाने वाला बालक कहीं भी अपनी हीनता का अनुभव नहीं करता है ओर बहुत लाड़ – प्यार से पाला जाने वाला बालक दूसरे बालकों से दूर रहना पसंद करता है। अतः दोनों का सामाजिक विकास दो भिन्न दिशाओं में होता है।

6. आर्थिक स्थिति – माता – पिता की आर्थिक स्थिति का बालक के सामाजिक विकास पर उचित या अनुचित प्रभाव पड़ता है, उदाहरणार्थ, धनी माता – पिता के बालक अच्छे पड़ोस में रहते है, अच्छे व्यक्तियों से मिलते जुलते हैं और अच्छे विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करते हैं। स्वाभाविक रूप से ऐसे बालकों का सामाजिक कवासि उन बालकों से कहीं अधिक उत्तम होता है, जिन्हें निर्धन माता – पिता की सन्तान होने के कारण इस प्रकार की किसी भी सुविधा के कभी दर्शन नहीं होते हैं।

7. सामाजिक व्यवस्था – सामाजिक व्यवस्था, बालक के सामाजिक विकास को एक निश्चित रूप और दिशा प्रदान करती है। समाज के कार्य, आदर्श और प्रतिमान बालक के दृष्टिकोण का निर्माण करते हैं। यही कारण है कि ग्राम और नगर, जनतंत्र और अधिनायकतंत्र में बालक का सामाजिक विकास विभिन्न प्रकार से होता हैं।

8. विद्यालय – बालक के सामाजिक विकास के दृष्टिकोण से परिवार के बाद विद्यालय का स्थान सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। यदि विद्यालय का वातावरण जनतंत्रीय है, तो बालक का

सामाजिक विकास अविराम गति से उत्तम रूप से ग्रहण करता चला जाता है। इसके विपरीत, यदि विद्यालय का वातावरण एकतन्त्रीय सिद्धांतों के अनुसार दण्ड और दमन पर आधारित है तो बालक का सामाजिक विकास कुण्ठित हो जाता है।

9. शिक्षक – बालक के सामाजिक विकास पर शिक्षक का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। यदि शिक्षक शिष्ट, शान्त और सहयोगी है, तो उसके छात्र भी उसी के समान व्यवहार करते है। इसके विपरीत, यदि शिक्षक अशिष्ट, क्रोधी और असहयोगी है तो उसके, विद्यार्थी भी उसी के समान बन जाते हैं। योग्य शिक्षकों का संपर्क बालक के सामाजिक विकास पर निश्चित प्रभाव डालता है। स्ट्रैंग ने लिखा है – ''वास्तविक सामाजिक ग्रहणशीलता और योग्यता वाले शिक्षकों से दैनिक सम्पर्क, बालक के सामाजिक विकास में अतिशय योग देता है।''

10. खेल कूद – बालक के सामाजिक विकास में खेल – कूद का विशेष स्थान है। खेल द्वारा ही वह अपनी सामाजिक प्रवृत्तियों और सामाजिक व्यवहार का प्रदर्शन करता है। खेल द्वारा ही उसमें उन सामाजिक गुणों का विकास होता है, जिनकी उसको आजीवन आवश्यकता रहती है। अतः खेल के अभाव में बालक के सामाजिक विकास पीछे रह जाना स्वाभाविक है। स्किनर एवं हैरिमन के शब्दों में – 'खेल का मैदान बालक का निर्माण – स्थल है। यहॉ उसे प्रदान किये जाने वाले सामाजिक और यांत्रिक उपकरण उसके सामाजिक विकास को निश्चित करने में सहायता देते हैं।''

11. समूह या टोली – समूह या टोली के सदस्य के रूप में बालक इतना व्यवहार कुशल हो जाता है। कि समाज में प्रवेश करने के बाद उसे किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव नहीं होता है। हरलॉक के इन शब्दों में पूर्ण सत्यहै – समूह के प्रभावों के कारण बालक सामाजिकव्यवहार का ऐसा महत्वपूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त करता है जैसा प्रौढ़ – समाज द्वारा निर्धारित की गई दशाओं में उतनी सफलता से प्राप्त नहीं किया जा सकता है''। 20

12. अन्य कारक – बालक के सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले अन्य महत्वपूर्ण कारक हैं – संस्कृति, कैम्प–जीवन, रेडियो, सिनेमा, समाचार पत्र और पत्रिकायें।

किशोरावस्था की समस्याऐं

किशोरावस्था की विशेष समस्याऐं है, जिन पर प्रकाश डालना आवश्यक है, वैसे तो किशोरो में शारीरिक विचलन (Physical Deviation) एवं शारीरिक दोष (Physical defects) जैसे दाँत, द्वष्टि एवं सुनने की आम समस्या है, परन्तु इसके अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक द्वष्टिकोण से कई समस्याऐं है, और इन सब का सीधा प्रभाव बच्चों के उपलदिध स्तर पर पड़ता है। निम्न समस्याऐं आमतौर पर किशोरो में देखने को मिलती है –

यौन व्यवहार संबंधी समस्या –

किशोरावस्था में यौन संबंधी कई समस्याऐं होती है, शारीरिक परिपक्वता के कारण उनके यौन अंगों का विकास तो पूरा हो जाता है, परन्तु उनमें मनोवैज्ञानिक परिपक्वता की कमी के कारण कई प्रकार की यौन समस्याऐं उत्पन्न हो जाती है। विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण के कारण काम भावना, पराकाष्टा की सीमा पार कर जाती है, बलात्कार की शिकार किशोरियाँ शादी से पहले गर्भवती होने से किशोर बालक उनका उत्तरदायित्व खुलकर अपने कंधो पर लेने से कतराते है। समस्या इतनी गंभीर हो जाती है, कि किशोरियों के पास आत्महत्या के अलावा कोई रास्ता नजर नहीं आता है, वे किसी तरह इस समस्या का समाधान कर भी लेती है तो समाज की नजर में इतना गिर जाती है, कि उनका मानसिक एवं सामाजिक विकास असंभव हो जाता है। इस समस्या को सुलझाने के लिए किशोरों को यौन शिक्षा देना अनिवार्यतः होना चाहिए।

स्कूल में समायोजन संबंधी समस्याऐं–

किशोरवय बालक–बालिकाओं को अपने सहपाठी एवं अध्यापकों के साथ एडजस्टमेंट का सामना करना पड़ता है। कुछ शिक्षकों के रूढ़िवादी होने के कारण एवं सख्त रवैये से किशोरों को दंडित होना पड़ता है। वे स्वतंत्र रूप से कुछ करने में अपने आपको असमर्थ पाते है। प्रायः स्कूल का सिलेवस टेक्नीकल होने से बालक–बालिकाऐं उसमें च्ंतजपबपचंजम नहीं कर पाते है और ऊबाउपन आने लगता है, एवं पाठ्यक्रम को न समझ पाने की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

परिवार एवं समाज के साथ समायोजन संबंधीं –

किशोर एवं किशोरियों की गंभीर समस्या परिवार से शुरू होती है। प्रायः देखा जाता है कि किसी भी सामाजिक कार्यक्रम में स्वतंत्र रूप से भाग लेने की अनुमति नहीं मिल पाने से तनाव बढ़ जाता है और परिवार में संघर्ष की शुरूआत हो जाती है अतंतः किशोर घर छोडने को मजबूर हो जाते है, और व्यवसायिक कार्यो में मानसिकता से उचित दिशा–निर्देश न मिलने से समस्या जटिल हो जाती है।

नैतिक व्यवहार से संबंधित समस्या –

कुछ किशोर–किशोरियों को सही व गलत की जानकारी न होने से वे अवास्तविक उच्च मानक निर्धारित कर लेते है, एवं उनके पूरा न होने की स्थिति में लडने झगडने लगते है और पूरा न होने की स्थिति में अनैतिक व्यवहार करने लगते है, और सामाजिक समायोजन भी नहीं कर पाते है।

वित्तीय समस्या –

किशोर–किशोरियों को वित्तीय समस्या का भी सामना करना पडता है। किशोरावस्था में बाल अपने भविष्य की भी प्लानिंग कर लेता है। अधिक से अधिक पैसा खर्च कर अपने साथी को भी खुश रखने के कारण कई बार वित्तीय समस्या का भी सामना करना पडता है अधिक गंभीर समस्या में आत्महत्या जैसी प्रवृत्ति को अपनाने से भी नहीं चूकते और कुंठा से ग्रसित हो जाते है।

मादक पदार्थो का सेवन –

प्रायः किशोरवय बालक–बालिकाओं में मादक पदार्थो का सेवन आज एक बढ़ी समस्या एवं अभिशाप बन चुका है, भोलेपन एवं नासमझी के कारण गांजा, चरस, कोकीन, एवं अन्य नशीलें पदार्थो का सेवन प्रारंम्भ कर देते है, एक बार लत लगने के बाद इससे उबरने में काफी समय लग जाता है। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से साबित हो चुका है, कि मादक पदार्थो के सेवन से इनमें सामाजिक, आर्थिक, नैतिक एवं शैक्षिक पतन होता चला जाता है।

आत्महत्या –

वर्तमान समय में किशोर–किशोरियों का आत्महत्या करना एक गंभीर समस्या बनता जा रहा है। किशोरावस्था में उठे आवेगों के कारण प्रिय वस्तु का न पाना, अभिभावकों द्वारा डाँट देना, परिवार में वित्तीय समस्या हो या सामाजिक अलगाव, स्कूल में झगड़ा अथवा

परीक्षा में अनुतीर्ण होना आत्महत्या का कारण बन जाता है। आए दिन समाचार पत्रों में किशोर–किशोरियों की आत्महत्या संबंधी खबर पडने को मिलती है बिना सोचे– समझे उठाए इस कदम से पूरा का पूरा परिवार सदमें में चला जाता है। (स्मिथ 1975) के अध्ययन के अनुसार किशोरों की मृत्यु का दूसरा मुख्य कारण आत्महत्या है। रॉन तथा साल्स (Ron & Salls 1977) तथा वेंज (1990) के अध्ययनों के अनुसार अधिकतर किशोर या किशोरी जो आत्महत्या कर लेते है या करने का प्रयास करते है, किसी समस्या से ग्रसित होते है। ऐसे किशोरों की पहचान कर उनके लिए अलग से मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

बालश्रम –

औद्योगीकरण की शोचनीय छवि को दर्शाते 13 से 19 वर्ष की आयु के किशोर मजदूरी करते पाये जाते है, इसके सामाजिक एवं आर्थिक परिणाम काफी गहरे है। बचपन में काम पर लगना सामाजिक बुराई तो है ही शारीरिक वृद्धि एवं विकास पर भी बुरा असर पडता है, बच्चे शिक्षा से वंचित होने के साथ–साथ इसका प्रभाव नागरिकता से जुडी जिम्मेदारी एवं कर्तव्यों पर पड़ता है बाल–श्रम के कारण ही जनसंख्या विस्फोट, पारिवारिक आमदनी का गिरता स्तर, निरक्षरता आदि प्रभावित होते है।

******